|| हरि ॐ ||

|| जीवनोपयोगी कुंजियां ||

Tips for Successful Life

ॐ दुर्दशा निवारण योग:-

दुर्दशा निवारण योग :- 1st April' 2012 (दोपहर को दो बजे से) , 26th Aug' 2012

समझो आदमी से कोई भूलें हुई है और उसके जीवन में उसकी दशा बहुत खराब है । इस दुर्दशा का निवारण कैसे हो ??

तो कश्यपजी ने बताया कि प्रायश्चितपूर्वक अगर कोई व्यक्ति , शुक्लपक्ष को दशमी तिथि हो और रविवार का योग हो उस दिन कोई प्रायश्चितपूर्वक श्रद्धाभक्तिभाव से ये नियम करे, तो उसकी दुर्दशा माने **दरिद्रता, झगड़े, विफलता, बीमारी, अशांति, इनके निवारण हेतु** स्कंदपुराण में सूर्यपूजा से संबंधित ये योग बताया गया है ।

यह योग शुक्ल?पक्ष दशमी तिथि हो और रविवार का योग पड़ता हो उस दिन किया जाता है और वह योग अब 1 अप्रेल 2012 को दोपहर को दो बजे से आ रहा है । फिर 26 अगस्तन2012 को अधिक मास में । इस साल ये दो योग बहुत अच्छो है ।

पूजन विधि :-

दुर्दशा निवारण हेतु स्कबन्दपुराण के अनुसारमहर्षि कश्यदपजी नारदजी को बताते है । उस दिन भगवान गणपतिजी का, सदगुरूदेव का और सूर्यदेव का मन ही मन स्म रण करे । गुरूदेव का सुमिरण करते हुए उनका पूजन करते हुए उनको मन ही मन प्रणाम करे । गणपतिजी का सुमिरण करते हुए ॐ गं गणपतये नम: आदि मंत्रों से उनका पूजन करे और सूर्य भगवान को मन ही मन सूर्य गायत्री मंत्र (**"ॐ आदित्याय विदमहे भास्कराय धीमहि तन्नो भानु प्रचोदयात्**") आदि बोलते हुए प्रणाम करे । उनका सुमिरण करे और प्रार्थना करे कि मेरी समस्तो प्रकार की दुर्दशा के निवारण हेतु आज हम यह पूजन कर रहे है । और लोटे में जल भरकर के फूल डाल दे,अक्षत डाल दे, कुंकुम डाल दे, और सूर्य को अर्ध्यत्दे, ॐ सूर्याय नम:, ॐ अर्काय नम:, ऐसे अर्घ्यद दे ।

फिर दुर्दशा प्रदान करनेवाली 10 देवियां है जो कश्यदपऋषि नारदजी को बता रहे है उन 10 देवियो ंको भी अर्ध्य, दे दें उनके नाम इस प्रकार है :-

|| हरि ॐ ||

ॐ दुर्मुख्यैr नम;

ॐ दीनबदनाय नम:,

ॐ मलिनायै नम-,

ॐ सत्यमनाशिन्यैp नम:

ॐ बुद्धिनाशिन्येिम:

ॐ हिंसायै नम:,

ॐ दुष्टांयै नम:,

ॐ मित्रविराधिन्यैन नम्:

ॐ उच्चावटनकारिन्यैम नम:

ॐ दुश्चिंचताप्रदायैनम:, ।

- श्री सुरेशानंदजी Navi Mumbai 21st March'2012